8.07.2020

Dr. Purnima Singh
Department of Political Science

B.A 1st year paper 1 part-2 political theory. Topic – peace Lecture-60

## शान्ति (Peace) - 1

आज जिन विश्व में रहते हैं, वहाँ आए दिन कोई-न-कोई दुर्घटना घटती रहती है। कहीं जातीय दंगे होते हैं, तो कहीं आतंकवादियों के द्वारा किसी घटना को अंजाम दे दिया जाता है। इसके अतिरिक्त कभी धर्म के नाम पर लोग लड़ते हैं, समाज टुकड़ों में बंट जाता है, तो कहीं क्षेत्रीय सीमाओं के आधार पर दो-राष्ट्र एक-दूसरे के सामने तोपें खड़ी रखते हैं, ऐसे वातावरण में मानव के जेहन में एक ही प्रश्न घूमता रहता है कि विश्व में शान्ति की स्थापना कैसे की जाए? लेकिन इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले उन घटनाओं का अध्ययन करना आवश्यक है, जो विश्व में शान्ति की स्थापना में बाधक रही है तथा उनसे बचने व शान्ति की स्थापना के लिए आज विश्व के स्वतन्त्र राष्ट्र कितने सक्रिय हैं? राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय युद्धों से डरे हुए मनुष्य शताब्दियों से स्थायी शान्ति की स्थापना के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। अब तक तीन बड़े विनाशकारी युद्ध हुए हैं जिनमें नेपोलियन का युद्ध, प्रथम महायुद्ध तथा द्वितीय महायुद्ध शामिल है। इन युद्धों ने मानव समाज को शान्ति की स्थापना के लिए मजबूर कर दिया है। इसमें एक ऐसी विचारधारा का विकास हुआ कि अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति कैसे स्थापित की जाए।

अति प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों में समझौते द्वारा विवाद को खत्म करने व शान्ति की स्थापना का वर्णन मिलता है।

आज शान्ति का क्षेत्र राष्ट्रीय न होकर अन्तर्राष्ट्रीय हो गया है। परमाणु शस्त्रों की खोज के बाद प्रत्येक राष्ट्र इस बात के लिए प्रयत्नशील है कि अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय में शान्ति की स्थापना कैसे हो सकती है? इटली के प्रसिद्ध दार्शनिक दांते (Dante) ने अपनी रचना 'डी मोनार्किया' में एक विश्व राज्य अथवा विश्व साम्राज्य का विचार प्रस्तुत किया है। उसके अनुसार अशान्ति से छुटकारा तभी प्राप्त हो सकता है, जब पोपशाही की लौकिक शक्ति को हटाकर सर्वव्यापी साम्राज्य की स्थापना की जाए। दांते ने अपने विचारों में विश्व शान्ति की स्थापना को सर्वोपरि स्थान दिया है।

14 वीं शताब्दी के दूसरे दार्शनिक पियरे दुबोइस (Peary Dubois) ने विश्व राज्य मंडल के विचार का समर्थन किया। उसने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'डी रिकुपिरातीन टिरे सैन्कटे' में ईसाइयों के बीच युद्ध का अन्त तथा शान्ति को अपना परम लक्ष्य रखा।

विश्व शान्ति की समस्या के समाधान के लिए कुछ अन्य प्रयास भी किए गए, क्योंकि उस समय तक आधुनिक राष्ट्रीय राज्यों का आविर्भाव हो चुका था। अतः उनके आपसी सम्बन्धों को सुनिश्चित करना आवश्यक था। विशेष रूप से इस युग में व्यापार, वाणिज्य तथा पर्यटन का प्रसार हो रहा था, तो राष्ट्रों को सहयोग व सहचार्य की आवश्यकता थी। 1693 में विलियम पेन नामक एक धर्म प्रचारक ने एक स्थायी संगठन की स्थापना का विचार दिया, जो राष्ट्रों में शान्ति बनाए रख सके। उन्होंने अपनी पुस्तक "An Essay Towards the Present and the Future Peace of Europe)

जो 1693 में प्रकाशित हुई थी, में शान्ति की स्थापना के लिए यूरोप की एक संसद बनाने का सुझाव दिया।

कुछ समय पश्चात् स्पेनिश युद्ध हो गए तथा उनसे घबराकर शान्ति स्थापना का प्रयास किया गया, जिसके लिए यूट्रेक्ट सम्मेलन आयोजित किया गया। 19 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही सेंट साइमन ने पेरिस में अपनी शान्ति की योजना को प्रकाशित किया। सन् 1816 में इंग्लैंड में स्थायी शान्ति की स्थापना के लिए एक स्वैच्छिक समाज की स्थापना की गई।

शान्ति स्थापना के लिए सारे प्रयास व्यर्थ हो गए। प्रथम महायुद्ध के प्रारम्भ होते ही अनेक लेखकों, विचारकों और राजनीतिज्ञों ने शान्ति की स्थापना के लिए प्रयास तेज कर दिए और इस प्रकार युद्धों की विभीषिका से बचने के लिए विश्व संगठन खड़ा किया गया, जिसे राष्ट्र संघ का नाम दिया गया।

स्थायी शान्ति के आधारों पर विचार करने के लिए सन् 1914 में प्रोफेसर रैपर्ड (Prof. Rappard) की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया तथा हॉलैंड में भी इसी तरह का एक संगठन खड़ा किया गया। इसका उद्देश्य भी शान्ति कायम करना था और इस संगठन को 'शान्ति के लिए संगठन' का नाम दिया गया।

जैसे-जैसे युद्ध की भयंकरता बढ़ती गई, सरकारी व गैर सरकारी, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शान्ति के लिए प्रयास और अधिक तेज किए गए। अमेरिकी राष्ट्रपति विल्सन ने इस समय एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। वह युद्ध के बाद एक ऐसी व्यवस्था का सृजन करना चाहते थे, जिसमें स्थायी शान्ति व प्रजातन्त्र पूर्णतया सुरक्षित रह सके।

18 नवम्बर, 1918 को प्रथम महायुद्ध के विराम के साथ-साथ विश्व व्यवस्था की स्थापना हेतु शान्ति सम्मेलन का आयोजन किया गया, क्योंकि पूरा विश्व युद्ध की विभीषिका देख चुका था और वह किसी भी तरह शान्ति की स्थापना के लिए दृढ़ संकल्प था। इसके लिए सन् 1919 में पेरिस शान्ति सम्मेलन हुआ, जिसमें राष्ट्र संघ का निर्माण हुआ।

सन् 1939 में विश्व शान्ति की स्थापना के लिए जो प्रयास किए गए थे वे सब बेकार हो गए, क्योंकि सन् 1939 में दूसरा विश्व युद्ध प्रारम्भ हो गया था। दूसरे विश्व युद्ध ने पूरी मानव जाति को हिलाकर रख दिया। दूसरे विश्व युद्ध में जर्मनी ने लंदन पर भारी बमबारी की और दूसरी तरफ अंग्रेजों ने हजारों बमवर्षकों को जर्मनी पर आक्रमण के लिए भेज दिया तथा दूसरी तरफ अमेरिका द्वारा जापान के दो प्रमुख शहरों हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बमों से आक्रमण कर दिया गया जिसके कारण बहुत अधिक जन-माल का नुकसान हुआ। द्वितीय महायुद्ध के बाद इन देशों के बीच अपने-आप को सर्वोच्च बनाने के लिए एक प्रतिस्पर्धा होने लगी और इसके परि- परिणामस्वरूप नए-नए हथियार विकसित किए गए।

आज संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.) नामक संगठन शान्ति की स्थापना के लिए सक्रिय है लेकिन इराक व अफगानिस्तान में अमेरिका द्वारा जो कार्यवाही की गई, उसमें संयुक्त राष्ट्र संघ की अवहेलना की गई।